प्रकाशन तिथि : 01 मई, 2022
प्रेषण तिथि : 04 मई, 2022

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 26 | अंक 04 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

(श्री प्रताप फाउंडेशन का दो दिवसीय चिंतन शिविर संपन्न)

'दो दिन की तरह ही सदैव सोचते रहें'

दो दिन से आप सब दिव्य प्रकृति का चिंतन कर रहे हैं, समझ रहे हैं, समझा रहे हैं। लगता है जो हम न कर सके वह आप करने को तत्पर हैं, अवसर हमें भी मिला, अनवरत कर्मशील रहकर जितना कर सके वह हमने भी किया, अब लगता है कि आप उस काम को आगे बढ़ा रहे हैं। श्री प्रताप फाउंडेशन, श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन आदि श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखाएं हैं जो संघ के तत्वावधान में ईश्वरीय कार्य की निमित्त बन रही हैं। हम चाहें नहीं समझ पायें लेकिन यह सब ईश्वर का सौंपा हुआ कार्य है और वही हमसे करवा रहा है। मुझे आशीर्वाद देने को कहा गया है तो मैं तो आप सबसे अनुगृहीत हूं और आग्रह करता हूँ कि इन दो दिन की तरह सौ दिन ही नहीं बल्कि सौ वर्षों तक आप ऐसा ही सोचते रहें, सदैव आपका चिंतन ऐसा ही बना रहे।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

हजारों युनिट रक्तदान कर मनाया जन्मदिन

राजनेताओं के समर्थकों द्वारा अपने नेता के समर्थन में अनेक तरह के कार्यक्रम कर उनकी लोकप्रियता को प्रदर्शित किया जाता है। इसी क्रम में संबंधित नेता का जन्मदिन मनाने की परंपरा विगत वर्षों में प्रारंभ हुई है। राजनेताओं के समर्थक भारी भीड़ जुटाकर उन सबके बीच अपने नेता का जन्मदिन मनाते हैं लेकिन राजस्थान विधानसभा में उपनेता प्रतिपक्ष राजेंद्र सिंह राठौड़ के समर्थकों ने उनके जन्मदिन को अनुठे ढंग से मनाकर ऐसे जन्मदिन मनाने वालों के समक्ष एक मिशाल पेश की है। उनके समर्थकों ने उनके जन्मदिन 21 अप्रेल को विभिन्न स्थानों पर रक्तदान शिविर आयोजित कर उनका जन्मदिन मनाया। ऐसे रक्तदान शिविर 17 अप्रेल से ही प्रारंभ हुए और 21 अप्रेल के बाद तक चलते रहे। पूरे राजस्थान में राजधानी जयपुर से लेकर दूरस्थ गांवों तक में ऐसे शिविर आयोजित किए गए और उनमें 21 अप्रेल की शाम तक प्राप्त सूचना के अनुसार 41000 युनिट से अधिक रक्त का संग्रहण विभिन्न रक्त संग्रहण केन्द्रों पर हो चुका था।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता दिग्विजय सिंह से संवाद

कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता व अविभाजित मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजयसिंह अपनी निजी यात्रा पर 16 अप्रेल को जयपुर आये। उनके सम्मान में वरिष्ठ कांग्रेसी नेता व राजस्थान पर्यटन निगम के अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह राठौड़ ने अपने आवास पर अल्पाहार कार्यक्रम का आयोजन किया। इस आयोजन में समाज के गणमान्य व्यक्तियों, वरिष्ठ कांग्रेसी नेताओं, माननीय मुख्यमंत्री व मंत्रियों को भी आमंत्रित किया। माननीय संरक्षक महोदय को भी श्री धर्मेंद्र सिंह ने आग्रह पूर्वक आमन्त्रित किया। श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी के साथ संरक्षक श्री भी इस कार्यक्रम में पधारे एवं वहां उपस्थित राजनेताओं व अन्य गणमान्य लोगों से संवाद स्थापित किया। श्री दिग्विजय सिंह के साथ माननीय संरक्षक श्री की लंबी मंत्रणा हुई एवं उन्हें श्री क्षत्रिय युवक संघ की जानकारी दी। श्री दिग्विजय सिंह ने संघ की कार्यप्रणाली को लेकर अनेक जिज्ञासाएं प्रकट की गई जिनका माननीय संरक्षक महोदय ने समाधान किया।

नाल (बीकानेर), नाथद्वारा (राजसमंद) और बाढ़मोचिंगपुरा (दौसा) में प्रशिक्षण शिविर संपन्न

बीकानेर संभाग के नाल गांव में श्री क्षत्रिय युवक संघ का माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर 12 से 17 अप्रैल तक मोहन सिंह नाल के फॉर्महाउस पर आयोजित हुआ। केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ के संचालन में संपन्न इस शिविर में बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर, नागौर, सीकर, पाली, जोधपुर, जयपुर, सिरोही, जालौर आदि जिलों के 50 स्वयंसेवकों ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का माध्यमिक स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर में बौद्धिक के सत्र में 'हमारा उद्देश्य और हमारा मार्ग' विषय पर प्रवचन में बताया गया कि सृष्टि में कुछ भी निरुद्देश्य नहीं है इसलिए हमारा जीवन भी निरुद्देश्य नहीं हो सकता। हमारा विद्याध्ययन, नौकरी, कुटुंब पालन आदि हमारे लौकिक उद्देश्य हैं जो देश, काल और परिस्थिति के सापेक्ष है किंतु हमारे जीवन का हेतु स्वधर्म पालन है जो देश, काल और परिस्थिति से निरपेक्ष हमारा उद्देश्य है। हमने क्षत्रिय कुल में जन्म लिया है इसलिए क्षात्र धर्म ही हमारा स्वधर्म है। हमारे स्वभाव में ही स्वधर्म का सूत्र छिपा है। हमारा जीवन जातीय जीवन की अटूट श्रृंखला में एक कड़ी है और उसी वंश परंपरा के अनुसार हमें स्वभाव भी मिला है। इस स्वभाव के अनुकूल अपने स्वधर्म का पालन करने से ही हम ईश्वर तक पहुंच सकते हैं। क्षात्र-धर्म पालन करने के लिए बल की, सामर्थ्य की आवश्यकता है, बिना शक्ति संचय के क्षात्र धर्म पालन संभव नहीं है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ की प्रणाली में धारण, पोषण और नियमन की शक्ति के संतुलित प्रयोग से साधक को सामर्थ्यवान बनाया जाता है जिससे वह क्षात्र धर्म का पालन कर सके। संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली में शारीरिक बल, साधन बल, जनबल, मनोबल, इष्टबल आदि सभी प्रकार के बलों का उपार्जन निहित है। संघ ने एकांतिक साधना के स्थान पर सामूहिक साधना का मार्ग इसीलिए चुना है कि यह गुणों व शक्तियों को अर्जित करने का सरलतम मार्ग है और समूह की शक्ति से कठिन साधना भी सरल बन जाती है। संघ की साधना को स्पष्ट करते हुए बताया गया कि यह ऊर्ध्वगामी साधना है। शरीर तमोगुणी होने से स्वभावतः सुख चाहता है और इंद्रियां भोग चाहती है लेकिन साधना इसके बिल्कुल विपरीत है। शरीर को तपस्या कराना, इंद्रियों को भोगों से विरत करना, मन को वश में करना कठिन है लेकिन संघ की साधना यही है। संघ समाज में कौटुंबीय जीवन का निर्माण कर रहा है। न्यूनतम आवश्यकताओं में निर्वहन करना, श्रेय को प्रेय पर वरीयता देना, कष्ट सहिष्णुता, शरीर, बुद्धि व हृदय का समन्वय, कर्तापन के भाव से मुक्ति आदि संघ की साधना के मूल तत्व हैं। इसी प्रकार 'जीवित समाज के लक्षण' विषय पर प्रवचन में बताया गया कि हमारे समाज के महापुरुषों ने प्रत्येक क्षेत्र में ऐसी सीमाएं बांधी जिन्हें कोई छू नहीं सका। चाहे वह सुशासन का क्षेत्र हो, उदारता का क्षेत्र हो, वीरता का क्षेत्र हो, दान का क्षेत्र हो, भक्ति का क्षेत्र हो या शरणागत वत्सलता की बात हो, हमारे महापुरुषों ने जो आदर्श रखे उनकी बराबरी संसार में कोई भी नहीं कर सका। हमारे भीतर इतनी क्षमता होने का कारण है हमारी अटूट जातीय जीवन की श्रृंखला। संसार में सबसे लंबी जातीय जीवन श्रृंखला क्षत्रिय समाज की ही है। सतयुग से लेकर हमारा अब तक का क्रमबद्ध इतिहास रहा है। इसी विशेषता के कारण क्षात्रधर्म सनातन संस्कृति की धुरी रहा है। हमारे समाज में अभी भी स्वधर्म की मान्यता शेष है, सांस्कृतिक मान्यताओं का पालन हमारा समाज आज भी कर रहा है, पीड़ित मानवता के प्रति संवेदना अभी भी हमारे समाज में जीवित है, हमारा समाज आत्मीयता के बंधन से अभी भी बंधा हुआ है और नवीन ज्ञान के प्रति नमनशील होने की क्षमता भी हमारे समाज में है। यह सभी बातें सिद्ध करती हैं कि हमारा समाज रुग्ण अवश्य है परंतु जीवित है और पुनः स्वस्थ हो सकता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ की संपूर्ण साधना समाज को पुनः स्वस्थ व सबल बनाने के लिए ही है। इन सैद्धांतिक बातों को व्यवहार में लाने के लिए सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली द्वारा अभ्यास करवाया गया। खेलों व चचाओं के माध्यम से इन 6 दिनों में शिविरार्थियों को अपने आपको देखने, जांचने, परखने व तदनुसार स्वयं को बदलने के लिए उपयुक्त वातावरण उपलब्ध करवाया गया। 17 अप्रैल को शिविरार्थियों को विदाई देते हुए शिविर प्रमुख ने कहा कि इस शिविर में छह दिनों तक हमने कर्तव्य की बात की, स्वधर्म की बात की। लुप्तप्राय रजपूती की आन फिर से फिरने का यहां स्वप्न देखा गया। इस स्वप्न को साकार करने का दायित्व हम पर ही है। इस शिविर से पुनः अगले शिविर में आने तक हम जिस विषमय वातावरण वाले संसार में जा रहे हैं वहां इस प्रकार का अमृतमय जीवन जीना संभव नहीं है। यहां जो कुछ मिला है वह संघ की संपदा है, अमानत है। इसे हमें सुरक्षित रखना है, उसका पोषण करना है, इस पौधे को पनपाना है और जब अनुभव हो कि हम कमजोर पड़ रहे हैं तो दौड़कर संघ के अगले शिविर में आ जाएं। संघ चाहता है कि हमारा यह संबंध जीवनव्यापी और जीवनपर्यंत बने। हम साथ मिलकर आगे बढ़ेंगे तो हम मंजिल पर अवश्य पहुंचेंगे किंतु अभी तो न जाने हमारे जैसे कितने स्वयंसेवकों को नींव में पत्थर बनना है। बिना क्षात्रधर्म के पालन के संसार का कल्याण नहीं हो सकता। यही ईश्वर की इच्छा है। इस बात को हम नहीं समझे हैं इसलिए संघ समझा रहा है। आपसे आशा है कि जो कुछ यहाँ प्राप्त किया है उसे संसार में बांटेंगे, जहां भी रहेंगे संघ का प्रकाश फैलाएंगे। आपने जो कुछ यहां सीखा है उससे संसार लाभान्वित हो। हमारे जीवन व्यवहार से सभी को यह अनुभव हो कि संघ में जाने से जीवन परिवर्तित होता है। जो कुछ हम देखें, सुनें, करें वह सब संघ के अनुकूल हो। केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा व संभाग प्रमुख रेवंत सिंह जाखासर सहयोगियों सहित शिविर में उपस्थित रहे। मोहन सिंह नाल, नवीन सिंह भवाद, गजेंद्र सिंह लूंछ आदि ने व्यवस्था में सहयोग किया। इसी प्रकार राजसमंद जिले में नाथद्वारा स्थित श्री महाराणा प्रताप छात्रावास में 14 से 17 अप्रैल तक श्री क्षत्रिय युवक संघ का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। संभागप्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ का शिक्षण केवल सुनने या समझने के लिए ही नहीं है अपितु जीवन में उतारने के लिए है। यदि जीवन में नहीं उतारेंगे तो यह हमारे लिए भार भी बन सकता है। इस ज्ञान जीवन में उतारने का माध्यम है अभ्यास। इसलिए जो सीखा है उसका अभ्यास करने के लिए बार-बार शिविरों में आते रहें। यहां प्राप्त शिक्षण जब हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन जाएगा तभी हम अपने आचरण से समाज को कर्तव्य की राह पर चलने को प्रेरित कर सकेंगे। शिविर में राजसमंद, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, अजमेर, जयपुर, चूरू, जैसलमेर आदि जिलों के युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली तथा मेवाड़-वागड़ संभागप्रमुख भंवर सिंह बेमला भी सहयोगियों सहित शिविर में उपस्थित रहे। भीम सिंह कल्ला खेड़ी, गोविंद सिंह खेड़ी, कालू सिंह कल्ला खेड़ी, ईश्वर नाथ सेदरा, रघुराज सिंह सोडावास, लहर सिंह खुमाणपुरा, द्वीप सिंह उलपूरा फार्म आदि ने व्यवस्था में सहयोग किया। पूर्वी राजस्थान संभाग के दौसा प्रांत में बाढ़ मोचींगपुरा में 26 अप्रैल से 2 मई तक श्री क्षत्रिय युवक संघ का माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। शिविर का संचालन करते हुए केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ अपने शिविरों के माध्यम से हमें क्षत्रियोचित गुणों का अभ्यास करवा रहा है। कोई भी गुण जब तक हमारे चरित्र का अंग नहीं बनता तब तक वह कोरा आदर्श ही है और किसी भी गुण को अपने चरित्र का अंग बनाने का एकमात्र उपाय उसका नियमित व निरंतर अभ्यास है। पूर्व काल में हमारे परिवारों में, गुरुकुलों में इस प्रकार की व्यवस्था थी कि क्षत्रिय के लिए आवश्यक शौर्य, तेज, धैर्य, वीरता इत्यादि गुणों का अभ्यास सहज रूप से हो जाता था। लेकिन वर्तमान में उस व्यवस्था के नष्ट हो जाने से उन गुणों का शिक्षण समाप्त प्रायः हो गया है। श्री क्षत्रिय युवक संघ उसी कमी को पूरा कर रहा है और हमारे समाज की युवा पीढ़ी को क्षत्रियत्व को धारण करने का अभ्यास करवा रहा है। शिविर में दौसा, करौली, बाड़मेर, चूरू, पाली, जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर के साथ ही उत्तरप्रदेश के बिजनौर तथा कानपुर जिलों के लगभग 65 शिविरार्थियों ने संघ का माध्यमिक स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त किया। संभाग प्रमुख मदन सिंह बामणिया सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वंयसेवक **श्री भवानी सिंह मुंगेरिया,** उपाधीक्षक पुलिस एवं **श्री नीम्ब सिंह भीखसर** कानिस्टेबल को उत्कृष्ट कार्यों के उपलक्ष में विभाग द्वारा डीजीपी डिस्क पुरस्कार से नवाजे जाने पर हार्दिक बधाई एवं उज्वल भविष्य की मंगलकामनाएं।

शुभेच्छु:

नरपत सिंह चिराणा	कृष्ण सिंह रानीगांव	महिपाल सिंह चूली	स्वरूपसिंह मुंगेरियां	राजेंद्र सिंह भिंयाड़ (द्वितीय)	नगसिंह देवका	जालमसिंह केलनोर
ईशवरसिंह हरसाणी	देवी सिंह भिंयाड	देवीसिंह रानीगांव	अशोकसिंह भीखसर	खुमानसिंह रानीगांव	सुजानसिंह देदूसर	कंवराजसिंह रानीगांव
गुलाब सिंह दूधवा	महेन्द्र सिंह चोहटन	शैतान सिंह तुड़बी	प्रेम सिंह दूधवा	दौलत सिंह मुंगेरिया	छगन सिंह लूणू	गणपत सिंह बूठ
पृथ्वीसिंह कोटड़ा	वीरसिंह गंगासरा	कालूसिंह गंगासरा	नींब सिंह आकोड़ा	उदयभानसिंह चौहटन	मनोहरसिंह जिंजनियाली	भगतसिंह जसाई
उदयसिंह लाबराऊ	सज्जनसिंह उगेरी	जैतमालसिंह बिशाला	समंदरसिंह देदूसर	महेंद्र सिंह भाडली	प्रेमसिंह लूणू	लालसिंह आकोड़ा
बाबू सिंह सरली	सांवल सिंह भैंसड़ा	स्वरुपसिंह भाडली	प्रतापसिंह बांदरा	कमल सिंह गेहूं	थानसिंह शिवकर	नरपत सिंह नवातला
विजय सिंह माडपुरा	दुर्जनसिंह पुत्र कुंपसिंह दूधवा	महेन्द्र सिंह तेजमालता एडवोकेट	गणपत सिंह हूरो का तला			

संपादकीय

संघर्ष के विषय के रूप में इतिहास

इतिहास ऐसा विषय है जिस पर वर्तमान का कोई बस नहीं चलता। कोई भी वर्तमान भविष्य के लिए इतिहास बन सकता लेकिन स्वयं के लिए इतिहास नहीं बना सकता। इस प्रकार वर्तमान स्वयं इतिहास बन सकता है लेकिन इतिहास बना नहीं सकता। वहीं इतिहास अपने आप में मूल्यवान संपत्ति होता है। इस संपत्ति से हर कोई धनवान बनना चाहता है। जिसके पास यह धन नहीं होता वह अपने आपमें हीन भावना से ग्रसित होता है और परिणाम स्वरूप या तो इसको संपत्ति मानना ही नहीं चाहता या येन केन प्रकारेण अपने आपको इस गौरवशाली संपत्ति से धनवान बनाने के लिए हाथ पांव मारता है। इस दूसरे कारण से ही इतिहास संघर्ष का विषय बन जाता है और इसी के तहत वर्तमान के इतिहास विहीन वर्ग इतिहास की बंदरबांट करने में लगे हैं।

हमारे देश में 15-16वीं शताब्दी में युरोपीय लोगों का आगमन प्रारंभ हुआ। उनको हमारे गौरवशाली इतिहास की जानकारी हुई और उसके सामने अपने आपको बौना समझने लगे क्योंकि उनके पास इस संपदा का अभाव था। अपनी विस्तारवादी नीति, औद्योगिकीकरण एवं तथाकथित पुनर्जागरण के कारण उनका प्रभाव पूरे विश्व में बढ़ रहा था और वर्तमान तुलनात्मक रूप से अधिक प्रभावी बनता जा रहा था, ऐसे में वे अपने वर्तमान के अनुरूप इतिहास के लिए तड़फ रहे थे। इसी प्रक्रिया के तहत उनकी नजरें भारत के गौरवशाली इतिहास पर पड़ी और वे उसे अपना बनाने की योजना बनाने लगे। योजना के प्रथम चरण में उन्होंने अपने आपको भारत से जोड़ने के सूत्र ढूंढने प्रारंभ किए। भारत के पौराणिक इतिहास में से अपनी इस चाह को पुष्ट करने की सामग्री ढूंढने के लिए योजनाबद्ध रूप से संसाधनों को झोंककर उनका अध्ययन प्रारंभ किया और इसी के परिणाम स्वरूप आर्य नामक नश्ल की धारणा अस्तित्व में आयी। वस्तुस्थिति यह है कि भारतीय परंपरा में कभी नश्लवाद नहीं था और मनुष्य की उसके आकार प्रकार आदि के आधार पर कोई श्रेणीकरण नहीं था। हमारे यहाँ आर्य शब्द का उपयोग अपने से श्रेष्ठ व्यक्ति को संबोधन के लिए होता था इसलिए हमारे पौराणिक साहित्य में इसका उल्लेख बहुतायत में हुआ है। इसी उल्लेख को आधार बनाकर उन्होंने आर्य नश्ल की धारणा बनाई और स्वयं के अतीत को इससे जोड़ने लगे। विशेष रूप से जर्मन लोगों ने इस धारणा को बलवती बनाया और अपने आपको प्राचीन युनान से संबद्ध बताने वाले यहुदियों पर श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए इसका उपयोग किया। इस प्रकार श्रेष्ठ बनने के जुनूनी अभियान का परिणाम द्वितीय विश्वयुद्ध से पूर्व यहुदी नरसंहार के रूप में हुआ। लेकिन भारत के गौरवशाली अतीत से स्वयं को जोड़ने की यह प्रवृत्ति वर्तमान में उनके अतिशय प्रभाव के कारण निरुत्साहित हुई क्योंकि वर्तमान के विजेता अपने आपको गुलाम देश के इतिहास का अनुकरणकर्ता कैसे स्वीकार करते इसलिए उन्होंने नयी धारणाएं बनानी प्रारंभ की और यह कहने लगे कि आर्य नामक प्रजाति मूल रूप से भारत की निवासी नहीं थी बल्कि युरोप से यहां आई थी। अब तक भारत के अतीत से अपने आपको जोड़ने वालों ने भारत के अतीत को ही अपने से जोड़ा और इस प्रकार अपने आपको भारत से श्रेष्ठ सिद्ध करना प्रारंभ किया। इतिहास से जुड़कर अपनी हीन भावना को शांत करने से प्रारंभ हुई यह प्रक्रिया इतिहास पर ही कब्जा करने में परिणित हुई और अंग्रेज यह सिद्ध करने लगे कि भारत में रहने वाले लोग मूल आर्यों के चरित्र से विचलित हो गए हैं और हम इन्हें पुनः मार्ग पर लाने को आये हैं। हमारे यहां के जागरूक लोग इसका विरोध करते रहे और यह संघर्ष कमोबेश अभी भी जारी है, इतिहास संघर्ष का विषय बना हुआ है। युरोप से आये अंग्रेज भारत से चले गये लेकिन अपनी मानसिक संतानों के माध्यम से अभी भी इस संघर्ष के सूत्रधार बने हुए हैं और हमारे पौराणिक इतिहास का अपनी सुविधा के अनुसार अर्थ प्रचारित कर इतिहास के धन से हमें कंगाल करने और स्वयं धनवान बनने की प्रक्रिया को जारी रखे हुए हैं।

इस पूरी प्रक्रिया में सर्वाधिक आघात हमारे पर होते हैं क्योंकि भारतीय इतिहास के केन्द्र में सदैव हमारे पूर्वज रहे हैं। इसी प्रक्रिया के तहत हमारे इतिहास को संघर्ष का एक नये प्रकार का अखाड़ा बनाया जा रहा है। इस बार के संघर्ष के सूत्रधार युरोपीयन राष्ट्रवाद की प्रेरणा लेकर भारतीयता की बात करने वाले प्रतिक्रियावादी लोग हैं जो अपनी प्रतिक्रिया को धार देकर उसके बल पर सत्तासुख भोगने के लिए विभिन्न जातियों को अपना सहयोगी बनाना चाहते हैं। ऐसे तत्वों ने भी योजनाबद्ध रूप से लंबी प्रक्रिया का सहारा लिया है। विभिन्न जातियों के बीच मौजूद ऐसे तत्वों ने प्रारंभ में स्वयं की जाति को राजपूतों से जोड़कर अपने आपको राजपूत समाज से ही संबद्ध बताना प्रारंभ किया। किसी न किसी रूप में इतिहास की चोरी की अपने पूर्वजों को राजपूत बताना प्रारंभ किया। यह बात हमें भी उसी तरह सुहाती है जैसे युरोपीयन्स द्वारा अपने आपको भारत से संबद्ध बताने की बात हमें सुहाया करती थी। हम यह मानते हैं कि कोई अपने आपको राजपूत कहता है तो हमें क्या आपत्ति होनी चाहिए, अच्छा ही है वे अपने आपको हमारे पूर्वजों से जोड़ रहे हैं। लेकिन कालांतर में यह प्रक्रिया उसी रूप में चलती है जैसी पूर्व में युरोपीयन्स द्वारा चलाई गई थी। प्रारंभ में वे अपने आपको हमारे पूर्वजों से जुड़ा बताते हैं और कालांतर में यह कहने लगते हैं कि वे तो उनके ही पूर्वज हैं, हमने तो अपने आपको श्रेष्ठ साबित करने लिए उनके पूर्वजों को अपना बना लिया था। सम्राट मिहिरभोज वाले विषय में ऐसा ही हो रहा है। प्रारंभ में यह कहा गया कि गुज्जर जाति प्रतिहारों से संबद्ध जाति है और अब यह कहा जाने लगा कि सभी प्रतिहार ही गुज्जर थे इसीलिए मिहिरभोज गुर्जर सम्राट थे। इसी क्रम में आज पश्चिमी उत्तरप्रदेश के गांव गांव में सम्राट मिहिरभोज की गुज्जर (गुर्जर) के रूप में प्रतिमाएं स्थापित कर दी गई हैं और उस क्षेत्र में यह राजपूत गुज्जर संघर्ष का कारण बन चुका है। यह तो एक मात्र उदाहरण है बाकि विभिन्न क्षेत्रों में अनेक महापुरुषों को लेकर इस प्रकार का संघर्ष प्रारंभ हो चुका है और युरोपीयन्स की तरह विभिन्न जातियां अपने वर्तमान के संसाधनों और सत्ता में भागीदारी के बल पर इतिहास को अपना बताने पर तुली हुई हैं और हम या तो इस विषय में उदासीन हैं या जानते हुए भी प्रभावी रूप से उन्हें रोकने में अक्षम है। हमारी इस अक्षमता और उदासीनता के परिणाम स्वरूप अनेक मोर्चों पर हमारे विरोधी तैयार किए जा रहे हैं और हमारी अटूट व प्राचीन ऐतिहासिक श्रृंखला को कहीं सातवीं तो कहीं बारहवीं सदी तक सीमित किया जा रहा है। इसका पहला उपाय तो उदासीनता को दूर करना है, अपने इतिहास को प्रबलता से सार्वजनिक रूप से अपना कहा जाना आवश्यक है, हमारे भूले बिसरे नायकों को निरंतर स्मरण करने के लिए अभियान चलाया जाना आवश्यक है। वैसे देखा जाए तो उदासीनता ही एक मात्र कारण है और उसे दूर करना ही एक मात्र निवारण है। इसके अभाव में धीरे-धीरे हमारे हर नायक की पहचान को विवादित बनाकर कालांतर में हमारे पूरे इतिहास को विवादित बना दिया जाएगा और हमारी प्रेरणा के स्रोत को अवरुद्ध कर दिया जाएगा। इसलिए नितांत आवश्यकता है कि संपूर्ण समाज की इस उदासीनता को दूर किया जाए और इतिहास धन के महत्व को समझकर उसके लिए चलने वाले संघर्ष के हर स्वरूप को समझा जाए और तद्नुरूप कार्य किया जाए।

माननीय संरक्षक श्री का प्रवास

विगत दिनों माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर जोधपुर, जयपुर, नागौर, बीकानेर सहित विभिन्न स्थानों के प्रवास पर रहे। 14 अप्रेल को बाड़मेर से जोधपुर पधारे एवं वहां रात्रि विश्राम के पश्चात 15 अप्रेल को जयपुर पहुंचे। 15 से 25 तक जयपुर ही रहे एवं इस बीच विभिन्न राजनीतिक व सामाजिक लोगों से भेंट की। 21 अप्रेल को केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' सभी स्वयंसेवकों ने संरक्षक श्री के सान्निध्य में स्नेहमिलन किया। 23-24 अप्रैल को जयपुर के सागर महल गार्डन में आयोजित श्री प्रताप फाउंडेशन के दो दिवसीय चिंतन शिविर में माननीय संरक्षक श्री पधारे तथा शिविरार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान किया। 25 अप्रैल को आप कुचामन स्थित आयुवान निकेतन कार्यालय पहुंचे तथा स्थानीय स्वयंसेवकों से भेंट की। यहां रात्रि विश्राम के पश्चात 26 अप्रैल को नागौर पहुंच कर उगम सिंह गोकुल के निवास पर सहयोगियों व स्वयंसेवकों के साथ बैठक की। यहां से रवाना होकर संरक्षक श्री बीकानेर स्थित नारायण निकेतन कार्यालय पहुंचे। (शेष पृष्ठ 7 पर)

विखंडन को रोकने का दायित्व क्षत्रिय पर

गांव हमारे सामाजिक ताने-बाने की एक महत्वपूर्ण इकाई है लेकिन वर्तमान में अनेक कारणों से इस इकाई में विखंडन हो रहा है। इस विखंडन को रोकने का दायित्व क्षत्रिय पर है क्योंकि प्रारंभ से ही क्षत्रिय गांव के नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभाता आया है। उसी भूमिका के अनुरूप हमें सभी जाति-धर्म के व्यक्तियों से सौहार्दपूर्ण व्यवहार बनाए रखते हुए गांव के वातावरण को प्रेमपूर्ण बनाना होगा जिससे सभी अपने-अपने कर्तव्य का पालन करते हुए राष्ट्र और मानवता की सेवा कर सकें। (शेष पृष्ठ 7 पर)

पांचौड़ी में हुआ राजपूत समाज का स्नेहमिलन

राजपूत समाज खींवसर का स्नेहमिलन कार्यक्रम खींवसर के पांचौड़ी कस्बे में स्थित पांचौड़ी गढ़ परिसर में 24 अप्रैल को आयोजित हुआ जिसमें खींवसर विधानसभा क्षेत्र के सभी गांवों से समाजबंधु उपस्थित रहे। वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया ने उपस्थित समाजबंधुओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय देते हुए कहा कि हर युग में क्षत्रिय ने समाज व मानवता की पीड़ा को दूर करने हेतु क्षात्र धर्म का पालन किया। चाहे वो राम के रूप में रावण व असुरो का नाश हो या कृष्ण के रूप में महाभारत का महासंग्राम हो, क्षत्रिय ने हमेशा अपने कर्तव्य को प्राथमिकता दी है। उसी प्रकार पूज्य श्री तनसिंह जी ने समाज की पीड़ा से पीड़ित होकर श्री क्षत्रिय युवक संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली प्रारंभ की जिसके माध्यम से संघ निरन्तर समाज की बहुमुखी समस्याओं का समाधान करने का निरन्तर प्रयास कर रहा है। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन, श्री प्रताप फाउंडेशन जैसे आनुषंगिक संगठनों के द्वारा भी संघ समाज को शक्तिशाली बनाने के लिए कार्य कर रहा है। समाज के युवाओं के सामाजिक भाव को सकारात्मक दिशा प्रदान करने का कार्य इन संगठनों के माध्यम से किया जा रहा है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए धनंजय सिंह खींवसर ने कहा कि हमें समाज को राजनीतिक रूप से जागृत करने का प्रयास करना होगा। तभी हम अपने अधिकारों को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे। आज की लोकतांत्रिक व्यवस्था में जो समाज संगठित होकर कार्य करता है वही सफल होता है इसलिए आवश्यकता है कि हम भी एकता के महत्त्व को समझकर संगठित बनें। साथ ही समाज की कुरीतियों को दूर करने हेतु हमें धरातल पर प्रयास करना होगा। दुर्ग सिंह खींवसर ने अपने उद्बोधन में सामाजिक एकता पर बल दिया व सभी से साथ मिलकर चलने का आह्वान किया। कार्यक्रम में गोपाल सिंह चावण्डिया, नारायण सिंह गोटन, केशर सिंह, किशोर सिंह बालवा, जीवण सिंह देऊ, आशु सिंह भाटी, देवी सिंह गोधन, राजेंद्र सिंह पांचलासिद्धा सरपंच सहित अनेकों गणमान्य समाजबंधु उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर द्वारा प्रेषित 'यथार्थ गीता' सभी को भेंट की गई। कार्यक्रम के पश्चात सामूहिक स्नेहभोज रखा गया व आगामी कार्यक्रम शीघ्र ही आयोजित करने पर चर्चा हुई। पांचौड़ी सरपंच प्रतिनिधि राजेंद्र सिंह व पंचायत समिति सदस्य जोध सिंह ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

साबरकांठा प्रांत में स्नेहमिलन का आयोजन

गुजरात के साबरकांठा प्रांत में अरावली तहसील के कूडोल कंपा गांव में 17 अप्रैल को श्री क्षत्रिय युवक संघ का स्नेह मिलन कार्यक्रम रखा गया जिसमें क्षेत्र के 15 गांवों के 75 युवाओं ने भाग लिया। संभाग प्रमुख विक्रम सिंह कमाना ने आज के समय में समाज में श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्य की आवश्यकता पर चर्चा की और कहा कि समाज आज जिन चुनौतियों का सामना कर रहा है उनका मूल कारण हमारे द्वारा अपने कर्तव्य को भूल जाना ही है। संघ हमें अपने उसी कर्तव्य की याद दिला रहा है और उसके पालन के लिए हमें सामर्थ्यवान भी बना रहा है। बैठक के दौरान साबरकांठा क्षेत्र में संघ के विस्तार तथा उसमें युवाओं की भूमिका पर भी चर्चा की गई। प्रांत प्रमुख राजेंद्र सिंह भैंसाणा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ तथा पूज्य श्री तन सिंह जी का परिचय उपस्थित समाज बंधुओं को दिया तथा प्रांत में होने वाली सांघिक गतिविधियों के संबंध में जानकारी प्रदान की। पूरण सिंह छेल्लीगोड़ी, अमर सिंह मगोड़ी, वनराज सिंह भैंसाणा सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम से उत्साहित युवाओं ने आगामी माह में मोडासा जिले के बाकरोल गांव में ऐसी ही एक और बैठक का आयोजन निश्चित किया। डॉ नागेन्द्र सिंह मोडासा ने साथियों के साथ मिलकर व्यवस्था में सहयोग किया।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	उ.प्र.शि.	19.05.2022 से 29.05.2022 तक	आलोक आश्रम (बाड़मेर)। बाड़मेर से गेहूं रोड पर स्थित। - कम से कम 10वीं कक्षा की परीक्षा दे चुके हों। - दो प्राथमिक तथा एक माध्यमिक शिविर कर चुके हो, वो ही आ सकते हैं। - 60 वर्ष से ऊपर की आयु वाले या तो आमंत्रित हों या पूर्व स्वीकृति ले ली हो, वे ही आ सकेंगे। 18 मई की शाम तक पहुंचना है। गणवेश लेकर आएं।
2.	उ.प्र.शि. (बालिका)	19.05.2022 से 29.05.2022 तक	विरात्रा (बाड़मेर)। बाड़मेर से बसें उपलब्ध हैं। - 9वीं कक्षा उत्तीर्ण तथा कम से कम दो शिविर कर चुकी हों, वे ही आ सकेंगी। - केशरिया गणवेश आवश्यक

गजेन्द्रसिंह आऊ, शिविर कार्यालय प्रमुख

Shri Taneraj (PG Girls Hostel)
Aircooled rooms (Att Balcony)
kitchenette (cooktop-cylinder)
Ro water facility
Free WIFi
Refrigerator
Note-nearby coaching.
college hospital and market.

- Comfortable & affordable accommodations
- safe and hygenenic environment
Rashmi Ramderia sector 4 udaipur
contact - 7727884060, 9079806262

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

Mobile : 95497-77775, 87428-13538, 98288-34449
जय श्री बॉयज हॉस्टल
BEST FOR 8th, 9th, 10th, 11th, 12th, Science Blo, Maths, IIT, NEET, JEE, Foundation, Target
CLC के पास, पिपराली रोड, सीकर
ALLEN के पीछे, शरदलता हॉस्पिटल के पास, पिपराली रोड, सीकर

अलख नयन आई हॉस्पिटल

Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

'धांधल राठौड़ों का गौरवशाली इतिहास' पुस्तक का विमोचन समारोह आयोजित

राव धांधल स्मृति महासभा जोधपुर द्वारा मारवाड़ राजपूत सभा भवन में 'धांधल राठौड़ों का गौरवशाली इतिहास पुस्तक' का विमोचन समारोह आयोजित किया गया। तारातरा मठ के महंत प्रतापपुरी महाराज ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि क्षत्रिय अपने वास्तविक स्वरूप को ना भूले तथा समाज और राष्ट्र के लिए अपने पूर्वजों की भांति बलिदान देने के लिए आगे आएं। इस समाज के अनेक महापुरुषों ने अपने त्याग और बलिदान से इतिहास रचा है जिसे ऐसी पुस्तकों के माध्यम से सामने लाने की आवश्यकता है। राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति आयोग के पूर्व अध्यक्ष ओंकार सिंह लखावत ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि पाबूजी राठौड़ जैसे हमारे पूर्वजों ने हमारा मस्तक गर्व से ऊंचा किया है। उनके बलिदान की स्मृतियां लोकमानस में अजर-अमर है। पूर्व सांसद नारायण सिंह माणकलाव ने कहा कि हमारे उज्जवल इतिहास को प्रकट करने वाली ऐसी पुस्तकों के लेखन का कार्य निश्चित रूप से सराहनीय है। पूर्व मंत्री शंभू सिंह खेतासर तथा मारवाड़ राजपूत सभा के अध्यक्ष हनुमान सिंह खांगटा ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। पुस्तक के लेखक रामनिवास शर्मा ने पुस्तक के बारे में जानकारी प्रदान की। समारोह के दौरान पुस्तक के प्रकाशन में सहयोग करने वाले भामाशाहों का भी सम्मान किया गया। रतन सिंह चंपावत ने कार्यक्रम का संचालन किया।

दीपेंद्र सिंह पलसाना का भारतीय निशानेबाजी टीम में चयन

सीकर जिले के पलसाना गांव निवासी दीपेंद्र सिंह शेखावत का 50 मीटर राइफल प्रोन जूनियर पुरुष और 50 मीटर राइफल थ्री पी जूनियर पुरुष वर्ग में भारतीय टीम में चयन हुआ है। इनका चयन दिल्ली में हुए ट्रायल के आधार पर हुआ जिसमें इन्होंने तीसरा स्थान प्राप्त किया। भारतीय दल के साथ वे 1 से 18 मई तक दिल्ली में आयोजित प्रशिक्षण शिविर में हिस्सा लेंगे। हाल ही में दीपेंद्र सिंह का चयन भारतीय सेना में भी हुआ है। 2021 में दीपेंद्र सिंह राष्ट्रीय निशानेबाजी प्रतियोगिता में 5 गोल्ड मेडल और 4 सिल्वर मेडल जीत चुके हैं। इनका लक्ष्य ओलंपिक में देश के लिए पदक जीतना है। इनके पिता राजेंद्र सिंह शेखावत श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की सीकर टीम के सहयोगी हैं। दीपेंद्र सिंह की बहन जया भी राष्ट्रीय स्तर की तैराकी खिलाड़ी है।

श्रवण सिंह मगरा ने घुड़सवारी में जीता स्वर्ण

बाड़मेर जिले के मगरा गांव निवासी श्रवण सिंह ने नवलगढ़ (झुंझुनू) के डूंडलोद में राष्ट्रीय घुड़सवारी संघ व भारतीय अश्व संस्था की ओर से आयोजित नेशनल इंडिजिनियस एंड्यूरेंस घुड़दौड़ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक जीता। किसान परिवार से आने वाले और चंडीगढ़ में सामान्य तनख्वाह पर निजी नौकरी करने वाले श्रवण सिंह ने किराए पर घोड़ी लेकर यह प्रतियोगिता जीती। उनका अगला लक्ष्य राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर की घुड़सवारी प्रतियोगिताओं में सफलता प्राप्त करना है।

श्री राजपूत सभा जयपुर के 2022-2025 त्रिवार्षिक सत्र के लिए कार्यकारिणी समिति का निर्वाचन

श्री राजपूत सभा जयपुर के त्रिवार्षिक सत्र (2022-2025) के लिए कार्यकारिणी समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों का निर्वाचन किया गया है, जिनकी सूची निम्नानुसार है

कार्यकारी सभापति - श्री राम सिंह चंदलाई
उपसभापति - श्री प्रताप सिंह राणावत
महामंत्री - श्री बलवीर सिंह हाथोज
संगठन मंत्री - श्री देवी सिंह शेखावत
सह मंत्री - श्री मोहन सिंह बगड़
कोषाध्यक्ष - श्री प्रद्युमन सिंह मुंदुरु
सदस्यगण - श्री अजय पाल सिंह पचकोडिया, श्री अजय वीर सिंह जीरोता, श्री गजराज सिंह कैलाई, श्री जोगेंद्र सिंह सांवरदा, श्री जितेंद्र सिंह शेखावत, श्री नटवर सिंह रॉयल, श्री पृथ्वी सिंह काली पहाड़ी, श्री मूल सिंह शेखावत, श्री महेंद्र सिंह भंवरथला, श्री लोकेंद्र सिंह लोटवाडा, श्री वीरेंद्र पाल सिंह, श्री श्रवण सिंह चौहान लवाण, श्री सुरेंद्र सिंह नरूका, श्रीमती हेमेंद्र कुमारी दूदू एवं श्री हर्षवर्धन सिंह शेखावत।

उपरोक्त सभी पदाधिकारियों व सदस्यों ने 27 अप्रैल को परंपरानुसार महाशक्ति की पूजा कर अपना पद ग्रहण किया।

शहीद गोपाल सिंह धांधल की मूर्ति का अनावरण

विगत वर्ष शहीद हुए गोटन निवासी गोपाल सिंह धांधल की प्रथम पुण्यतिथि पर 28 अप्रेल को गोटन में उनकी मूर्ति का अनावरण किया गया। इस अवसर पर आयोजित सभा को संबोधित करते हुए राजस्थान विधानसभा के उपनेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र सिंह राठौड़ ने कहा कि देश की सीमाओं की रक्षा करते हुए शहादत को प्राप्त होने वाला व्यक्ति मरता नहीं बल्कि अमर हो जाता है। ऐसे शूरवीरों का परिवार हमारे लिए सदैव सम्माननीय होता है क्योंकि उनके त्याग और बलिदान के कारण ही हम और हमारे देश की सीमाएं सुरक्षित हैं। उन्होंने कहा कि जन्म और मृत्यु का अटूट संबंध है, जन्म के साथ ही मृत्यु हमारा पीछा करना प्रारंभ कर देती है लेकिन जो समाज, राष्ट्र और संसार के लिए जीते और मरते हैं उनका जीवन और मृत्यु दोनों सफल हो जाते हैं। तारातरा मठ के महंत प्रताप पुरी जी ने कहा कि कर्तव्य बोध ही जीवन को सफल बनाता है और ऐसे ही कर्तव्य बोध के कारण बलिदान होने वाले सैनिक की मूर्ति के अनावरण में शामिल होना गर्व की बात है। कार्यक्रम को पूर्व शिक्षा मंत्री व विधायक वासुदेव देवनानी, महंत गरीबबंधु दास, रामप्रकाश महाराज, योगी लक्ष्मणनाथ, कमलनाथ आदि उपस्थित रहे। इस अवसर पर रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया।

(पृष्ठ एक का शेष)

दो दिन...

जयपुर की सिरसी रोड़ स्थित सागर महल मैरिज गार्डन में 23 व 24 अप्रेल को आयोजित श्री प्रताप फाउंडेशन के दो दिवसीय चिंतन शिविर के अंत में उपस्थित संभागीयों को संबोधित करते हुए माननीय संरक्षक महोदय भगवान सिंह रोलसाहबसर ने यह बात कही। उन्होंने कहा कि हीरक जयंती सबको विलक्षण लगती है, लेकिन मेरा मानना है कि भगवान ने कितना विलक्षण काम हमसे करवाया, श्रेय हमको मिल रहा है जबकि करने वाले भगवान थे जिनकी अंगुली के एक इंगित मात्र से संसार को बदला जा सकता है। भगवान ही हमारी पूर्वज परंपरा, क्षत्रिय परंपरा को बनाये रखने के लिए एक भूमिका तैयार कर रहे हैं, लोग हमारे जीवन से क्षत्रिय का चरित्र सीखें ऐसी भगवान की चाह है और इसीलिए हमें हमारे व्यक्तित्व पर कोई दाग नहीं लगने देना है। भगवान चाहते हैं कि हमारा उठना और चलना संसार के कल्याण के लिए आवश्यक है इसीलिए हमारा चयन किया है। अर्जुन साधारण व्यक्ति नहीं थे इसलिए भगवान ने उनको चुना और आप भी साधारण नहीं हैं इसीलिए भगवान ने आपको चुना है। ऐसा विलक्षण कार्य हमसे करवाना चाहते हैं इसके लिए हम कृतज्ञ होना सीखें भगवान के प्रति। पूज्य तनसिंह जी सदैव इस कृतज्ञता का अनुभव करते थे और अपने ईष्ट से सदैव समाज के लिए मांगते थे, स्वयं के लिए कुछ नहीं मांगते थे। सदैव प्रार्थना करते रहें कि हम नादान हैं, पग पग पर स्वार्थ और अहंकार आते हैं, उन्हें दूर करते जाना, हम इसमें सक्षम नहीं हैं। संरक्षक श्री ने कहा कि गीतांजलि के अंत में रविंद्र नाथ टैगोर ने लिखा है, 'हे परमेश्वर, मेरे मस्तक को तुम्हारे चरण रज तक झुका दे।' हम भी ऐसी ही प्रार्थना करें। पूज्य तनसिंह जी ने लिखा, 'सूत्र तेरा नृत्य मेरा, यंत्री तूं मैं यंत्र तेरा।' हम भी इसी भाषा में कृतज्ञ होना सीखें, जाति के प्रति कृतज्ञ होवें, परमेश्वर के प्रति कृतज्ञ होवें इसका एक ही अर्थ है। हम किसी राजनेता या अधिकारी की कठपुतली बनने की अपेक्षा परमेश्वर की कठपुतली बनें, इसी से पवित्रता आएगी और यह संसार भगवान का मंदिर बन पाएगा। 23 अप्रेल को प्रातः 11 बजे प्रारंभ हुई चिंतन बैठक में राजस्थान के 25 से अधिक जिलों से प्रतिनिधि के रूप में राजनीतिक कार्यकर्ता उपस्थित हुए। बैठक के प्रारंभ में श्री प्रताप फाउंडेशन की कार्ययोजना व आगामी एक वर्ष में करणीय कार्यों श्री प्रताप फाउंडेशन की कार्य योजना को आम राजपूत तक पहुंचाने के लिए बैठकें व यात्रा करने, अन्य समानों के साथ स्थानीय स्तर पर बैठकें करने, राजनीतिक कार्यकर्ताओं की वरिष्ठ राजनीतिज्ञों की उपस्थिति में राज्य स्तरीय कार्यशाला आयोजित करने व विधानसभावार राजपूत मतों के आंकड़े जुटाने आदि की जानकारी दी गई जिन पर इस चिंतन बैठक में चर्चा की जानी है। श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी श्री प्रताप फाउंडेशन की स्थापना एवं अब तक की यात्रा की जानकारी साझा की। शिविर के विचारणीय विषयों पर उपस्थित संभागीयों में से भंवरसिंह बांझाकुड़ी, जितेंद्र सिंह सांवराद, इन्द्रसिंह बागावास, राजेंद्र सिंह राठौड़ अजमेर, पराक्रम सिंह राठौड़, सुरेंद्र सिंह असावता, गजेंद्र सिंह झूंपेलाव, अनुपालसिंह भाटी, हरदयालसिंह कुचोली, शिवराजसिंह बिंठिया, मदनसिंह राजमथाई, प्रताप सिंह पीपासर, सुरेंद्र सिंह पांसल, नवीनसिंह भवाद, जितेंद्र सिंह कोटड़ी, गजेंद्र सिंह

चिराणा, अजयसिंह चौहान, राजेंद्र सिंह धोलिया, दिग्विजय सिंह करेलिया, श्यामप्रतापसिंह रुंवा, सुभाष राठौड़ मानपुरा, आसुसिंह सुरपुरा, लक्ष्मणसिंह रामासिया, श्रवणसिंह दासपां, जितेंद्र सिंह कारंगा, रविन्द्र सिंह धौलपुर, जुगलसिंह बेलासर, लक्ष्मणसिंह लुणाखेड़ा, कुंदनसिंह खाजुआला, राजेंद्र सिंह भिंयाड, भगवानसिंह रसाल, कमलेन्द्र सिंह हाड़ा, जसवंतसिंह थाटा, यशवर्धन सिंह झेरली, रामसिंह पिपराली, महेंद्र सिंह उम्मेदनगर, सुरेंद्र सिंह ख्याली, अजयसिंह बावड़ी, कल्याण सिंह मेलुसर, रामसिंह चरकड़ा, दीपेंद्र सिंह पीथापुरा, विक्रमसिंह सत्तासर, रविन्द्र सिंह दुधोड़ा, भंवरसिंह खारी बावड़ी आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। द्वितीय दिन संघप्रमुख माननीय लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास ने कहा कि संघ की स्थापना का उद्धेश्य 'परित्राणाय साधूनाम्, विनाशाय च दुष्कृताम' है और यह शक्ति के बिना संभव नहीं है। शक्ति का अर्जन साधना द्वारा किया जा सकता है जो श्री क्षत्रिय युवक संघ विगत 75 वर्षों से निरंतर कर रहा है। श्री प्रताप फाउंडेशन इसी प्रक्रिया का एक अंग है। संघ समाज की शक्ति का उपयोग कर विचार क्रांति, समाज क्रांति और अंत में राजनीतिक क्रांति द्वारा 'परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम' के लिए सक्षम बनने का लक्ष्य हासिल करना चाहता है और इसके लिए विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से क्रियाशील है। इसके उपरांत सभी ने जिलावार बैठकर अपने अपने जिले की योजना बनाई एवं करणीय बिंदुओं के प्रभारी व समय सीमा तय किए। 23 अप्रेल को राजस्थान विधानसभा में उपनेता प्रतिपक्ष राजेंद्र सिंह राठौड़ व 24 अप्रेल को राजस्थान पर्यटन निगम के अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह राठौड़ भी शिविरार्थियों से मिलने पहुंचे और अनौपचारिक चर्चा की।

हजारों यूनिट...

21 के बाद आई सूचनाओं व उसके बाद हुए रक्तदान की सूचनाओं को जोड़ें तो यह आंकड़ा और अधिक हो जाता है। कोरोना काल में व उसके बाद शिथिल पड़े रक्तदान शिविरों के कारण सभी ब्लड बैंक्स में रक्त की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। इतने बड़े स्तर पर हुए रक्तदान ने इस आवश्यकता की पूर्ति में बड़ा योग दिया। 21 अप्रेल को जयपुर स्थित भवानी निकेतन प्रांगण में आयोजित रक्तदान शिविर में माननीय संरक्षक महोदय भगवान सिंह रोलसाहबसर व श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी भी रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन करने शामिल हुए और वहां उपस्थित श्री राजेन्द्र राठौड के पुत्र व उनके समर्थकों को शुभकामनाएं दी। अपने विधानसभा क्षेत्र चुरु से लौटने पर श्री राजेन्द्र राठौड़ भी 22 अप्रेल को 'संघशक्ति' पहुंचे और माननीय संरक्षक महोदय का आशीर्वाद प्राप्त किया।

(पृष्ठ चार का शेष)

विखंडन...

27 अप्रेल को अपने बीकानेर प्रवास के दौरान माननीय संरक्षक श्री ने बेलासर में आयोजित स्नेहमिलन में उपर्युक्त बात कही।

उन्होंने कहा कि संघ के दृष्टिकोण से बेलासर मेरा परिचित गांव है क्योंकि यहां के युवा व वरिष्ठजन उत्साह पूर्वक सांघिक गतिविधियों में सम्मिलित होते रहे हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ पिछले 75 वर्षों से प्रशिक्षण शिविरों एवं शाखाओं के माध्यम से संस्कार निर्माण का जो कार्य कर रहा है वह आप सभी के सहयोग से ही संभव हो सका है, किंतु समाज की आवश्यकता बहुत अधिक हैं इसलिए आपके निरंतर सहयोग की आगे भी आवश्यकता है। उन्होंने सभी ग्रामवासियों से नियमित रूप से आपस में मिलकर बैठने और संवाद बनाये रखने का आह्वान किया। कार्यक्रम में उपस्थित समाजबंधुओं व मातृशक्ति को माननीय संरक्षक श्री की ओर से यथार्थ गीता पुस्तक भेंट की गई। संभागप्रमुख रेवन्त सिंह जाखासर सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

माननीय...

यहां उन्होंने कार्यालय में संचालित पुस्तकालय का अवलोकन किया। तत्पश्चात संभागप्रमुख रेवंत सिंह जाखासर से आगामी उच्च प्रशिक्षण शिविर की तैयारियों के संबंध में जानकारी प्राप्त की और आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किए। 27 अप्रैल को माननीय संरक्षक श्री बीकानेर के समीपवर्ती गांव बेलासर पहुंचे जहां उनके सानिध्य में स्नेह मिलन का कार्यक्रम रखा गया। बीकानेर से जोधपुर होते हुए बाड़मेर पधारे।

किरडोली बड़ी (सीकर) में सामाजिक समरसता की अनुकरणीय पहल

सीकर जिले की धोद तहसील के किरडोली बड़ी गांव में राजपूत समाज द्वारा सामाजिक समरसता और सौहार्द की अनुकरणीय मिसाल प्रस्तुत की गई। गांव के आर्थिक रूप से कमजोर मजदूर गोविंदराम मेघवाल की दो पुत्रियों के विवाह में गांव की सरपंच किरण कंवर द्वारा न केवल विवाह के आयोजन का अधिकांश खर्च वहन किया गया बल्कि राजपूत समाज के लोगों द्वारा विवाह की अधिकतर जिम्मेदारियां निभाई गई। दोनों दूल्हों को राजपूत समाज के युवाओं द्वारा घोड़ी पर भी बिठाकर बिंदोरी भी निकाली गई। सभी ग्रामवासियों ने इस पहल की सराहना करते हुए इसे सामाजिक सौहार्द को बढ़ाने वाला बताया।

हीरसिंह लोड़ता को पुत्र शोक

लोकेंद्र सिंह

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक हीर सिंह लोडता के पुत्र **लोकेंद्र सिंह** की 24 अप्रैल 2022 को सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से प्रार्थना करता है की दिवगंत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें तथा इस दुख की घड़ी में परिजनों को संबल प्रदान करें।

वरिष्ठ स्वयंसेवक चैनसिंह जी भाखरोद का निधन

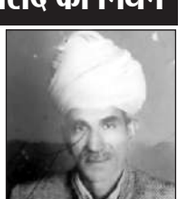

चैनसिंह जी भाखरोद

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **चैनसिंह जी भाखरोद** का दिनांक 24 अप्रैल 2022 को देहावसान हो गया। आपने श्री क्षत्रिय युवक संघ के कुल 35 शिविर किए। 4-7 सितंबर 1947 तक बाड़मेर में आयोजित प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर इनका पहला शिविर था। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें तथा परिजनों को संबल प्रदान करें।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हाकमसिंह/श्री भंवरसिंह गंगासरा
405वीं रैंक

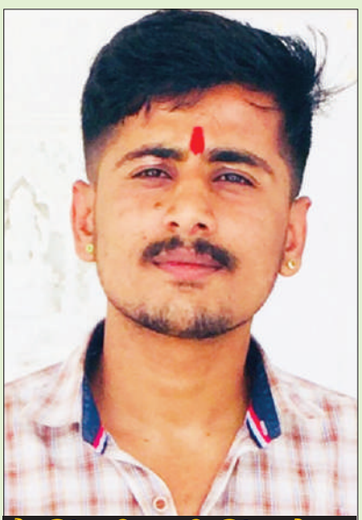

हेमसिंह/श्री बलवीरसिंह कोटड़ा
1705वीं रैंक

मगसिंह/श्री चंदनसिंह राजमथाई
5294वीं रैंक

दुर्जनसिंह/ श्री तनसिंह दुधवा
6404वीं रैंक

हमारे प्रिय स्वयंसेवक साथी **श्री हाकम सिंह गंगासरा, श्री हेमसिंह कोटड़ा, श्री मगसिंह राजमथाई** एवं **श्री दुर्जनसिंह दूधवा** को **रीट लेवल प्रथम** में चयनित होने पर हार्दिक बधाई एवं उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु:

नरपत सिंह चिराणा	कृष्ण सिंह रानीगांव	महिपाल सिंह चूली	स्वरूपसिंह मुंगेरियां	राजेंद्र सिंह भिंयाड़ (द्वितीय)	नगसिंह देवका	जालमसिंह केलनोर
ईशवरसिंह हरसाणी	देवी सिंह भिंयाड	देवीसिंह रानीगांव	अशोकसिंह भीखसर	खुमानसिंह रानीगांव	सुजानसिंह देदूसर	कंवराजसिंह रानीगांव
गुलाब सिंह दूधवा	महेन्द्र सिंह चोहटन	शैतान सिंह तुड़बी	प्रेम सिंह दूधवा	दौलत सिंह मुंगेरिया	छगन सिंह लूणू	गणपत सिंह बूठ
पृथ्वीसिंह कोटड़ा	वीरसिंह गंगासरा	कालूसिंह गंगासरा	नींब सिंह आकोड़ा	उदयभानसिंह चौहटन	मनोहरसिंह जिंजनियाली	भगतसिंह जसाई
उदयसिंह लाबराऊ	सज्जनसिंह उगेरी	जैतमालसिंह बिशाला	समंदरसिंह देदूसर	महेंद्र सिंह भाडली	प्रेमसिंह लूणू	लालसिंह आकोड़ा
बाबू सिंह सरली	सांवल सिंह भैंसड़ा	स्वरुपसिंह भाडली	प्रतापसिंह बांदरा	कमल सिंह गेहूं	थानसिंह शिवकर	नरपत सिंह नवातला
विजय सिंह माडपुरा	दुर्जनसिंह पुत्र कुंपसिंह दूधवा	महेन्द्र सिंह तेजमालता एडवोकेट	गणपत सिंह हूरो का तला			

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org